मण्डल प्रकाशन - 199

श्री सामायिकसूत्र

(अर्थ एवं प्रश्नोत्तर सहित)

समता सर्वभूतेषु, संयमः शुभभावना।
आर्त-रौद्र-परित्यागस्तद्धि सामायिकव्रतम्॥

प्रकाशक :

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

(संरक्षक :: अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

आचार्य श्री हीरा गुणगान

गुरु 'हस्ती' का पट्टधर 'हीरा', चमक रहा है जग में प्यारा।
जिन शासन की शान बढ़ी है, हर्षित है जन-गण मन सारा।।
प्रवचन जब सुनते तो श्रोता, मन्त्र मुग्ध रह जाते हैं,
खिल जाती हैं दिल-कलियाँ, शास्त्र-ज्ञान जब पाते हैं,
वाणी इतनी प्यारी मानो, कानों में पीयूष उतारा।।1।।
ज्ञान क्रिया का अद्भुत सङ्गम, यहाँ दिखाई देता है,
जिज्ञासु जो आता कोई, निधि लूट वह लेता है,
आनन्दित होकर वह जाता, जिसने मुखड़ा शान्त निहारा।।2।।
त्याग तपस्या देख आपकी, मन प्रमुदित हो जाता है,
आगम का यह गहन ज्ञान, गुरुवर की याद दिलाता है,
करें कहाँ तक गान गुणों का, वन्दन बारम्बार हमारा।।3।।
महिमा मण्डित जीवन जिनका, गुण सौरभ से महक रहा,
अनुपम 'हीरा' दिया गुरु ने, भक्तों का मन चहक रहा,
भव्य भावना 'मुनि गौतम' की, यश कान्ति का हो विस्तारा।।4।।

मण्डल प्रकाशन - 199

श्री सामायिकसूत्र

(अर्थ एवं प्रश्नोत्तर सहित)

समता सर्वभूतेषु, संयमः शुभभावना।
आर्त-रौद्र-परित्यागस्तद्धि सामायिकव्रतम्।।

प्रकाशक :

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

(संरक्षक :: अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

पुस्तक :

श्री सामायिकसूत्र (अर्थ एवं प्रश्नोत्तर सहित)

प्रकाशक :

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
सुबोध बॉयज सीनियर सैकेण्डरी
विद्यालय के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राजस्थान)
फोन : 0141-2575997

मूल्य : 12.00/- (बारह रुपये मात्र)

सतरहवाँ संस्करण : 2022

मुद्रित प्रतियाँ : 5100

लेजर टाइप सैटिंग :
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

मुद्रक :
इण्डियन मैप सर्विस, शास्त्री नगर, जोधपुर

अन्य प्राप्ति-स्थल :

- **श्री धीरज जी डोसी**
  श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ
  सामायिक स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
  कुम्हार छात्रावास के सामने, नेहरू पार्क,
  जोधपुर-342003 (राजस्थान)
  फोन : 0291-2624891
  मोबाइल : 9462543360
- **श्री प्रकाशचन्दजी सालेचा**
  16/62, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड,
  जोधपुर-342001 (राजस्थान)
  फोन : 9461026279
- **Shri Navratan ji Bhansali**
  C/o. Mahesh Electricals,
  14/5, B.V.K. Ayangar Road,
  BANGALURU-560053
  (Karnataka) 080-22265957
  Mob. : 09844158943
- **श्री मनोज जी संचेती**
  आर. सी. बाफना स्वाध्याय भवन के
  सामने, व्यंकटेश मन्दिर के पीछे, गणपति
  नगर, **जलगाँव-425001** (महा.)
  फोन : 9422591423
- **Shri Padamchand ji Kothari**
  7 B, "Satva", Opp. Shreyas Coop.
  Stores, Narayan Nagar Road,
  Shantivan, Paldi, **AHMEDABAD-**
  380007 (Gujarat) Ph. 9429303088

प्रकाशकीय

सामायिक मुक्ति की मूल साधना है। बिना समभाव प्राप्त हुए कोई भी प्राणी मुक्त नहीं हो सकता। अत: सामायिक की उपयोगिता स्वत: ही सिद्ध है। सामायिक का अर्थ होता है अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थिति में समान रहना। सामायिक का महत्त्व बताते हुए सम्बोध प्रकरण में कहा है–

जे केवि गया मोक्खं, जे वि य गच्छंति जे गमिस्संति।
ते सव्वे सामाइयप्पहावेण मुणेयव्वं।।
किं तिव्वेणं तवेणं, किं च जवेणं किं चरित्तेणं।
समयाइ विणा मुक्खो, न हु हुओ न होइ न होस्सइ।।

अर्थात् भूतकाल में जो भी साधक मोक्ष में गये हैं, वर्तमान में जो जा रहे हैं और भविष्य में जो जायेंगे, वे सभी सामायिक के प्रभाव से ही जानने चाहिए। यदि समभाव की प्राप्ति नहीं हुई तो व्यक्ति कितना ही तीव्र तप करे, जप करे, कितनी ही क्रिया पाले, मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। सामायिक के बिना न कभी मोक्ष हुआ है, न वर्तमान में हो रहा है और न ही भविष्य में होगा।

इस प्रकार भगवान ने स्पष्ट रूप से सामायिक के महत्त्व को प्रतिपादित किया है। सामायिक भावपूर्वक करने से विशेष फलदायक होती है। इसकी तुलना किसी अन्य वस्तु से करना इसके महत्त्व को कम आंकना है। यह साधना सभी साधनाओं में श्रेष्ठतम है, इसके लिए आगम वाक्य भी इसकी महत्ता को स्पष्ट करता है–

दिवसे दिवसे लक्खं देई, सुवण्णस्स खंडियं एगो।
एगो पुण सामाइयं, करेइ न पहुप्पए तस्स।।

अर्थात् एक ओर एक व्यक्ति नित्य प्रति एक लाख स्वर्ण खण्डिओं (लगभग बीस मण की एक खण्डी होती है। इसका भार 746 किलोग्राम बताया है।) का दान करता है और दूसरी ओर एक व्यक्ति है जो मात्र दो घड़ी सामायिक करता है तो दोनों में से सामायिक करने वाला श्रेष्ठ है। लक्ष खण्डिओं का दान एक सामायिक की भी समानता नहीं कर सकता।

प्रस्तुत पुस्तक **'श्री सामायिक सूत्र'** का सतरहवाँ संस्करण प्रकाशित करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मण्डल विगत 76 वर्षों से सत्साहित्य का प्रकाशन करता आ रहा है। इस पुस्तक को रुचिकर बनाने हेतु पिछले संस्करणों की भाँति इसमें भी सामायिक के पाठों को मूल, शब्दार्थ एवं विवेचन सहित प्रस्तुत किया जा रहा है। पुस्तक में सामायिक के 32 दोष, प्रश्नोत्तर, 24 तीर्थङ्करों, 20 विहरमानों, 11 गणधरों एवं 16 सतियों के नामों का भी समावेश किया गया है।

इस संस्करण के प्रकाशन में जयपुर के अनन्य गुरुभक्त, श्रद्धानिष्ठ, श्रावकरत्न **स्व. श्री राजेन्द्र कुमारजी-श्राविकारत्न श्रीमती सन्तोषजी पटवा परिवार** का अर्थसहयोग प्राप्त हुआ। एतदर्थ मण्डल परिवार आप सभी के प्रति आभार प्रकट करता है।

इसका **सतरहवाँ संस्करण** पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, इसी मंगलभावना के साथ........!

:: निवेदक ::

आनन्द चौपड़ा	**डॉ. धर्मचन्द जैन**	**विनयचन्द डागा**	**अशोक कुमार सेठ**
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	मन्त्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

1. नमस्कार-महामन्त्र

नमो अरिहंताणं,
नमो सिद्धाणं,
नमो आयरियाणं,
नमो उवज्झायाणं,
नमो लोए सव्व साहूणं।

एसो पंच नमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

नमो अरिहंताणं = अरिहन्तों को नमन। **नमो सिद्धाणं =** सिद्धों को नमन। **नमो आयरियाणं =** आचार्यों को नमन। **नमो उवज्झायाणं =** उपाध्यायों को नमन। **नमो लोए सव्व साहूणं =** लोक के सब साधुओं को नमन। **एसो =** यह। **पंच =** पाँच। **नमोक्कारो =** नमस्कार। **सव्व-पावप्पणासणो =** सब पापों को नाश करने वाला है। **च =** और। **सव्वेसिं =** सब। **मंगलाणं =** मंगलों में। **पढमं =** प्रथम। **मंगलं =** मंगल। **हवइ =** है।

जैन परम्परा में नमस्कार मन्त्र का सर्वोच्च गौरव-पूर्ण स्थान है। इसे पञ्च परमेष्ठी भी कहा जाता है। जिस व्यक्ति के मन में सदा नमस्कार मन्त्र के पवित्र भावों का चिन्तन चलता रहता है, उसका अहित

नहीं हो सकता। नमस्कार मन्त्र द्रव्य मंगल नहीं, भाव मंगल है। भाव मंगल ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि के रूप में अनेक प्रकार का होता है।

नमस्कार मन्त्र में व्यक्ति पूजा का नहीं, गुण पूजा का निर्मल भाव है। इसमें जिन महान् आत्माओं के गुणों का स्मरण किया गया है, वे दो रूपों में हैं–देव रूप में और गुरु रूप में।

राग–द्वेष और अज्ञान का क्षय करने वाले तथा संसारी आत्माओं को भव–दुःखों से मुक्त कराने वाले वीतराग एवं सर्वज्ञ अरिहंत देव हैं।

आठ कर्मों से मुक्त निरञ्जन–निराकार अशरीरी प्रभु सिद्धदेव हैं।

स्वयं ज्ञानादि आचार का पालन करते हुए दूसरों से भी जो आचार धर्म का पालन करवाये, ऐसे संघनायक साधु आचार्य गुरु हैं।

पास आने वाले जिज्ञासुओं को शास्त्र का ज्ञान देकर मिथ्यात्व को दूर करने वाले और अस्थिर आत्माओं को धर्म में स्थिर करने वाले साधु, उपाध्याय गुरु हैं।

पंच महाव्रतधारी और समिति–गुप्ति का पालन करने वाले मोक्ष मार्ग के साधक साधु–साध्वी गुरु हैं।

उक्त पाँच पदों को भाव–पूर्वक किया गया नमस्कार सब पापों का नाश करने वाला है। संसार के समस्त मंगलों में सर्वश्रेष्ठ मंगल होने के कारण यह नमस्कार मन्त्र प्रथम मंगल है।

◆◇◆

2. गुरु-वन्दनसूत्र

(तिक्खुत्तो का पाठ)

तिक्खुत्तो, आयाहिणं, पयाहिणं, करेमि, वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासामि, मत्थएण वंदामि।

तिक्खुत्तो = तीन बार। **आयाहिणं =** दाहिनी ओर से। **पयाहिणं =** प्रदक्षिणा। **करेमि =** करता हूँ। **वंदामि =** वन्दना करता हूँ। **नमंसामि =** नमस्कार करता हूँ। **सक्कारेमि =** सत्कार करता हूँ। **सम्माणेमि =** सम्मान देता हूँ। **कल्लाणं =** (आप) कल्याण रूप हैं। **मंगलं =** (आप) मंगल रूप हैं। **देवयं =** (आप) देव रूप हैं। **चेइयं =** (आप) ज्ञानवन्त हैं। **पज्जुवासामि =** (मैं) आपकी उपासना करता हूँ। **मत्थएण =** मस्तक झुकाकर। **वंदामि =** वन्दना करता हूँ।

यह गुरुवन्दनसूत्र है। संसार के प्राणिमात्र के मन में अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करके ज्ञान रूपी प्रकाश को फैलाने वाले गुरु कहलाते हैं।

आध्यात्मिक साधना के क्षेत्र में गुरु का पद सबसे ऊँचा है। कोई दूसरा पद इसकी समानता नहीं कर सकता। गुरु हमारी जीवन–नौका के खिवैया हैं। संसार के काम, क्रोध एवं लोभ आदि भयंकर दोषों से हमको छुड़ाकर ज्ञान की राह दिखाने वाले, मुक्ति के मार्ग पर ले जाने वाले गुरु ही हैं। ऐसे गुरुदेव की विनयपूर्वक वन्दना करना ही इस पाठ का प्रयोजन है।

◆◇◆

3. आलोचना-सूत्र

(इरियावहियं सुत्तं)
(इरियावहिया का पाठ)

इच्छाकारेणं संदिसह भगवं ! इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं ! इच्छामि पडिक्कमिउं। इरियावहियाए विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा, उत्तिंग, पणग, दग, मट्टी, मक्कडा संताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

भगवं = हे भगवन्। **इच्छाकारेणं =** मेरी इच्छा है कि। **संदिसह =** आज्ञा दीजिए। **इरियावहियं =** मार्ग में आने जाने की क्रिया का। **पडिक्कमामि =** प्रतिक्रमण करूँ। **इच्छं =** (आज्ञा पाकर बोलता है) स्वीकार है। **इच्छामि =** चाहता हूँ। **पडिक्कमिउं =** प्रतिक्रमण करना। **इरियावहियाए =** ईर्यापथिकी। **विराहणाए =** विराधना से। **गमणागमणे =** जाने-आने में। **पाणक्कमणे =** प्राणी के दबने से। **बीयक्कमणे =** बीज के दबने से। **हरियक्कमणे =** हरी वनस्पति के दबने से। **ओसा =** ओस। **उत्तिंग =** कीड़ियों के बिल। **पणग =** पाँच रंग की काई। **दग =** सचित्त पानी। **मट्टी =** सचित्त मिट्टी। **मक्कडा**

संताणा = मकड़ी के जाले को। **संकमणे =** कुचलने से। **जे =** जो। **मे =** मैंने। **जीवा =** जीवों की। **विराहिया =** विराधना की हो। **एगिंदिया =** एक इन्द्रिय वाले। **बेइंदिया =** दो इन्द्रिय वाले। **तेइंदिया =** तीन इन्द्रिय वाले। **चउरिंदिया =** चार इन्द्रिय वाले। **पंचिंदिया =** पाँच इन्द्रिय वाले जीवों को। **अभिहया =** सामने आते हुए को ठेस पहुँचाई हो। **वत्तिया =** धूल आदि से ढँके हों। **लेसिया =** मसले हों। **संघाइया =** इकट्ठे किये हों। **संघट्टिया =** पीड़ा पहुँचे जैसे छुआ हो। **परियाविया =** कष्ट पहुँचाया हो। **किलामिया =** खेद उपजाया हो। **उद्दविया =** हैरान किया हो। **ठाणाओ =** एक जगह से। **ठाणं =** दूसरी जगह। **संकामिया =** रखे हों। **जीवियाओ =** जीवन से। **ववरोविया =** रहित किया हो। **तस्स मिच्छा मि दुक्कडं =** वह मेरा पाप मिथ्या हो।

प्रस्तुत पाठ के द्वारा गमनागमन के दोषों का शोधन किया जाता है। यतनापूर्वक गमन करते हुए भी यदि कहीं प्रमाद के वश किसी जीव को पीड़ा पहुँची हो, तो उसके लिए उक्त पाठ में चिंतन किया गया है।

◆◇◆

4. उत्तरीकरण सूत्र

(तस्स उत्तरी सुत्तं)

(कायोत्सर्ग-प्रतिज्ञा का पाठ)

(आत्म-शुद्धि सूत्र)

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोहि-करणेणं, विसल्ली-करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं। एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं, न पारेमि ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि।

तस्स = उस (स्वआत्मा) को। **उत्तरी-करणेणं =** ऊपर उठाने के लिए। **पायच्छित्त =** प्रायश्चित्त। **करणेणं =** करने के लिए। **विसोहि-करणेणं =** विशेष शुद्धि करने के लिए। **विसल्ली-करणेणं =** शल्य रहित करने के लिए। **पावाणं कम्माणं =** पाप कर्मों का। **निग्घायणट्ठाए =** नाश करने के लिए। **ठामि =** करता हूँ। **काउस्सग्गं =** कायोत्सर्ग। **अन्नत्थ =** निम्न क्रियाओं

को छोड़ कर। **ऊससिएणं =** ऊँचे साँस लेने से। **नीससिएणं =** साँस छोड़ने से। **खासिएणं =** खाँसी आने से। **छीएणं =** छींक आने से। **जंभाइएणं =** जम्हाई आने से। **उड्डुएणं =** डकार आने से। **वायनिसग्गेणं =** अधो वायु से। **भमलीए =** चक्कर आने से। **पित्त =** पित्त के कारण। **मुच्छाए =** मूर्च्छा से। **सुहुमेहिं =** सूक्ष्म रूप में। **अंगसंचालेहिं =** अंग के संचालन से। **सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं =** सूक्ष्म रूप में कफ के संचार होने से। **सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं =** सूक्ष्म रूप में दृष्टि के संचालन होने से। **एवमाइएहिं आगारेहिं =** इस प्रकार आगारों से। **अभग्गो =** अखण्ड। **अविराहियो =** अविराधित। **हुज्ज मे काउस्सग्गो =** मेरा कायोत्सर्ग हो। **जाव =** जब तक। **अरिहंताणं =** अरिहंत। **भगवंताणं =** भगवन्तों को। **नमोक्कारेणं =** नमस्कार करके। **न पारेमि =** (कायोत्सर्ग को) नहीं पालूँ। **ताव =** तब तक। **कायं =** शरीर को। **ठाणेणं =** स्थिर रख कर। **मोणेणं =** मौन रखकर। **झाणेणं =** ध्यान रखकर। **अप्पाणं =** अपनी आत्मा को। **वोसिरामि =** पापकारी कर्मों (कषाय आदि) से अलग करता हूँ।

इस पाठ से कायोत्सर्ग करने का संकल्प किया जाता है। इसी भावना से यह पाठ अमुक आगारों के साथ कायोत्सर्ग करने की प्रतिज्ञा का निर्देश करता है। कायोत्सर्ग शरीर को स्थिर, वचन को मौन तथा मन को एकाग्र रखकर किया जाता है।

◆◇◆

5. कायोत्सर्ग-शुद्धि का पाठ

(काउस्सग्ग का पाठ)

काउस्सग्ग में आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया हो, धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्याया हो। काउस्सग्ग में मन, वचन, काया चलायमान हुए हों, तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

◆◇◆

6. चतुर्विंशतिस्तव

(उक्कित्तणं सुत्तं)

(लोगस्स का पाठ)

(तीर्थङ्कर स्तुति)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।1 ।।
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2 ।।

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।3 ।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ।।4 ।।
एवं मए अभिथुआ, विहूयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5 ।।
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।6 ।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7 ।।

लोगस्स = लोक में। **उज्जोअगरे =** प्रकाश करने वाले। **धम्मतित्थयरे =** धर्मतीर्थ की स्थापना करने वाले। **जिणे =** जीतने वाले (रागद्वेष को)। **अरिहंते =** अरिहंतों की। **कित्तइस्सं =** स्तुति करूँगा। **चउवीसंपि =** सभी चौबीस तीर्थङ्करों की। **केवली =** केवल-ज्ञानी। **उसभं =** ऋषभ (देवजी)। **अजिअं =** अजित (नाथजी)। **च =** और। **वंदे =** वन्दना करता हूँ। **संभव =** संभव (नाथजी)। **अभिणंदणं च =** और अभिनन्दन (जी) को। **सुमइं च =** और सुमति (नाथजी) को। **पउमप्पहं =** पद्मप्रभजी। **सुपासं =** सुपार्श्वनाथजी। **जिणं =** जिनराज को। **च =** और। **चंदप्पहं वंदे =** चन्द्रप्रभजी को वन्दन करता हूँ। **सुविहिं च =** और सुविधिनाथजी, **पुप्फदंतं =** पुष्पदन्तजी को। **सीअलसिज्जंस =** शीतलनाथजी, श्रेयांसनाथजी। **वासुपुज्जं च =** और वासुपूज्यजी को। **विमलमणंतं च जिणं =** विमलनाथजी तथा अनन्तनाथजी जिनेश्वर को। **धम्मं संतिं च वंदामि =** धर्मनाथजी और शान्तिनाथजी को वन्दन करता हूँ। **कुंथुं अरं च =** कुन्थुनाथजी और

अरनाथजी को। **मल्लिं वंदे =** मल्लिनाथजी को वन्दन करता हूँ। **मुणिसुव्वयं नमिजिणं च =** मुनिसुव्रतजी और नमिनाथजी को। **वंदामि रिट्ठनेमिं =** अरिष्टनेमिजी को वन्दन करता हूँ। **पासं तह वद्धमाणं च =** और पार्श्वनाथजी तथा वर्द्धमान जी को। **एवं मए अभिथुआ =** इस प्रकार मेरे द्वारा स्तुति किये गये। **विहूयरयमला =** कर्मरूपी रज मल से रहित। **पहीणजरमरणा =** बुढ़ापा और मृत्यु से रहित। **चउवीसंपि =** चौबीसों ही। **जिणवरा =** जिनेश्वर। **तित्थयरा =** तीर्थङ्कर। **मे =** मुझ पर। **पसीयंतु =** प्रसन्न होवें। **कित्तिय =** वचनयोग से कीर्तित। **वंदिय =** काययोग से नमस्कृत। **महिया =** मनोयोग से वन्दित। **जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा =** जो लोक में उत्तम हैं, वे सिद्ध। **आरुग्ग =** आरोग्य। **बोहिलाभं =** बोधिलाभ। **समाहिवरमुत्तमं दिंतु =** उत्तम एवं श्रेष्ठ समाधि देवें। **चंदेसु निम्मलयरा =** चन्द्रों से अधिक निर्मल। **आइच्चेसु अहियं =** सूर्यों से अधिक। **पयासयरा =** प्रकाश करने वाले। **सागरवर-गंभीरा =** महासमुद्र के समान गम्भीर। **सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु =** सिद्ध भगवान् मुझे सिद्धि (मोक्ष) प्रदान करें।

पाठ में भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर स्वामी तक चौबीस तीर्थङ्करों की स्तुति की गई है। वे हमारे इष्टदेव हैं। अहिंसा और सत्य का मार्ग बताने वाले हैं। वे हमारे परम देव हैं। उनका स्मरण करना, उत्कीर्तन (उत्कृष्ट गुणगान) करना और जप करना, हम सब का कर्त्तव्य है।

भगवान का ध्यान करने से, भगवान के नाम का जप करने से और उनके द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलने से जीवन पवित्र एवं दिव्य बनता है।

◆◇◆

7. सामायिक-प्रतिज्ञासूत्र

(करेमि भंते का पाठ)

(सामायिक लेने का पाठ)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं* पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

करेमि भंते ! सामाइयं = हे भगवन् ! मैं सामायिक ग्रहण करता हूँ। **सावज्जं जोगं =** सावद्य योग (पाप क्रियाओं) का। **पच्चक्खामि =** त्याग करता हूँ। **जाव नियमं पज्जुवासामि =** जब तक नियम का सेवन करूँ तब तक। **दुविहं तिविहेणं =** दो करण, तीन योग से। **न करेमि =** पाप कर्म करूँ नहीं। **न कारवेमि =** कराऊँ नहीं। **मणसा वयसा कायसा =** मन, वचन और काया से। **तस्स =** उसका (पहले के पापकर्म का)। **भंते! =** हे भगवन्! **पडिक्कमामि =** प्रतिक्रमण करता हूँ। **निंदामि =** निन्दा करता हूँ। **गरिहामि =** गर्हा करता हूँ। **अप्पाणं =** अपनी आत्मा को। **वोसिरामि =** (कषाय आदि से) अलग करता हूँ।

---

* जितनी सामायिक लेनी हों, 'उतने मुहूर्त उपरान्त नहीं पालूँ तब तक' ऐसा बोलें।

इस पाठ के द्वारा साधक सामायिक करने की प्रतिज्ञा करता है। सामायिक एक प्रकार का आध्यात्मिक व्यायाम है। व्यायाम भले ही थोड़ी देर के लिए ही हो, परन्तु उसका प्रभाव और लाभ स्थायी होता है। इससे मन को एकाग्र बनाये रखने की प्रेरणा मिलती है, इससे साधक का मनोबल बढ़ता है और उसे मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। सामायिक के काल में आत्मा मन, वचन और काया के पापकर्मों से भी बची रहती है। सामायिक परभाव से हटकर स्वभाव में रमण करने की कला है, समभाव की साधना करने की क्रिया है।

◆◇◆

8. शक्रस्तवसूत्र

(प्रणिपातसूत्र)
(नमोत्थु णं का पाठ)

नमोत्थु णं, अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं धम्मवर-चाउरंत-

चक्कवट्टीणं, दीवोत्ताणं, सरण-गई-पइट्ठाणं, अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोयगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं* नमो जिणाणं जिअभयाणं।

नमोत्थु णं = नमस्कार हो। **अरिहंताणं भगवंताणं =** अरिहन्त भगवन्तों को। **आइगराणं =** धर्म की आदि करने वाले। **तित्थयराणं =** चतुर्विध तीर्थ (संघ) की स्थापना करने वाले। **सयंसंबुद्धाणं =** स्वयं बोध को प्राप्त। **पुरिसुत्तमाणं =** पुरुषों में उत्तम। **पुरिससीहाणं =** पुरुषों में सिंह के समान। **पुरिसवर =** पुरुषों में श्रेष्ठ। **पुंडरीयाणं =** पुंडरीक कमल के समान। **पुरिसवर =** पुरुषों में श्रेष्ठ। **गंधहत्थीणं =** गन्धहस्ती के समान। **लोगुत्तमाणं =** सम्पूर्ण लोक में उत्तम। **लोगनाहाणं =** सम्पूर्ण लोक के नाथ। **लोगहिआणं =** सम्पूर्ण लोक का हित करने वाले। **लोगपईवाणं =** सम्पूर्ण लोक में दीपक के समान। **लोगपज्जोअगराणं =** लोक में ज्ञान का प्रकाश करने वाले। **अभयदयाणं =** अभय देने वाले। **चक्खुदयाणं =** ज्ञानरूपी चक्षु देने वाले। **मग्गदयाणं =** मोक्ष-मार्ग बताने वाले। **सरणदयाणं =** शरण देने वाले। **जीवदयाणं =** संयमी जीवन देने वाले। **बोहिदयाणं =** बोधि (सम्यक्त्व) देने वाले। **धम्मदयाणं =** चारित्र रूपी धर्म के दाता। **धम्मदेसयाणं =** धर्म के उपदेशक। **धम्मनायगाणं =** धर्म के नायक। **धम्मसारहीणं =** धर्मरूपी रथ के सारथी। **धम्मवर चाउरंत चक्कवट्टीणं =** चारों गति का अन्त करने

* दूसरी बार 'नमोत्थु णं' का पाठ बोलने पर शेष पाठ पहले के समान बोलें। 'ठाणं सपत्ताणं' के स्थान पर **'ठाणं संपाविउ-कामाणं'** बोलें।

वाले और श्रेष्ठ धर्म–चक्र के प्रवर्त्तन करने वाले। **दीवोत्ताणं =** द्वीप के समान रक्षक (आधारभूत)। **सरण–गई–पइट्ठाणं =** जीवों के लिए शरण, गति और प्रतिष्ठा देने वाले। **अप्पडिहय =** अप्रतिहत। **वर =** उत्तम। **नाण =** ज्ञान। **दंसण =** दर्शन के। **धराणं =** धारक। **विअट्टछउमाणं =** घाति कर्म से रहित। **जिणाणं =** स्वयं रागद्वेष को जीतने वाले। **जावयाणं =** दूसरों को जिताने वाले। **तिन्नाणं =** स्वयं भवसागर से तिरने वाले। **तारयाणं =** दूसरों को तिराने वाले। **बुद्धाणं =** स्वयं बोध पाये हुए। **बोहयाणं =** दूसरों को बोध देने वाले। **मुत्ताणं =** स्वयं कर्मों से मुक्त। **मोयगाणं =** दूसरों को मुक्त कराने वाले। **सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं =** सर्वज्ञ, सर्वदर्शी। **सिवमयलं =** कल्याणकारी एवं अचल। **अरूअं =** रोगरहित। **अणंतं =** अनन्त। **अक्खयं =** अक्षय। **अव्वाबाहं =** पीड़ारहित। **अपुणराविति =** पुनरागमन रहित। **सिद्धिगइ नामधेयं =** सिद्धि गति नाम के। **ठाणं संपत्ताणं =** स्थान को संप्राप्त (सिद्ध)। **ठाणं संपाविउकामाणं =** स्थान प्राप्त करने के लिये कामना करने वाले (अरिहंत)। **नमो जिणाणं =** नमस्कार हो जिनेश्वर भगवान को। **जिअभयाणं =** जिन्होंने भय को जीत लिया।

यह प्रणिपात सूत्र है। क्योंकि इसमें जिनेश्वर भगवान की स्तुति की गई है। इस पाठ को शक्रस्तव भी कहते हैं। इस पाठ के प्रथम वाचन में सिद्धों की एवं दूसरे वाचन में अरिहंतों की स्तुति की जाती है। स्तुति साहित्य में यह महत्त्वपूर्ण पाठ माना जाता है।

◆◇◆

9. सामायिक समापन सूत्र

(एयस्स नवमस्स)
(सामायिक पारने का पाठ)

एयस्स नवमस्स सामाइय-वयस्स पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइअकरणया, सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।1।।

सामाइयं सम्मं काएणं न फासियं, न पालियं, न तीरियं, न किट्टियं, न सोहियं, न आराहियं, आणाए अणु पालियं न भवइ, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।2।।

सामायिक में दस मन के, दस वचन के, बारह काया के, इन बत्तीस दोषों में से किसी दोष का सेवन किया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।3।।

सामायिक में स्त्री-कथा*, भक्त-कथा, देश-कथा, राज-कथा, इन चार विकथाओं में से कोई विकथा की हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।4।।

---

* बहिनें यहाँ पर ''**पुरुष कथा**'' बोलें।

सामायिक में आहार-संज्ञा, भय-संज्ञा, मैथुन-संज्ञा, परिग्रह-संज्ञा, इन चार संज्ञाओं में से किसी भी संज्ञा का सेवन किया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।5।।

सामायिक में अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार का जानते, अजानते, मन, वचन, काया से सेवन किया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।6।।

सामायिक-व्रत विधि से ग्रहण किया, विधि से पूर्ण किया, फिर भी विधि में कोई अविधि हुई हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।7।।

सामायिक में पाठ उच्चारण करते काना, मात्रा, अनुस्वार, पद, अक्षर, ह्रस्व, दीर्घ, कम-ज्यादा, आगे-पीछे, विपरीत पढ़ने-बोलने में आया हो तो अनन्त सिद्ध केवली भगवान की साक्षी से तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।8।।

एयस्स नवमस्स = इस नवमें। **सामाइय-वयस्स =** सामायिक-व्रत के। **पंच अइयारा =** पाँच अतिचार हैं। **जाणियव्वा =** (वे) जानने योग्य हैं। **न समायरियव्वा =** (किन्तु) सेवन करने योग्य नहीं। **तं जहा =** वे इस प्रकार हैं। **मणदुप्पणिहाणे =** मन में अशुभ विचार किये हों। **वयदुप्पणिहाणे =** अशुभ वचन बोले हों। **कायदुप्पणिहाणे =** शरीर से अशुभ कार्य किये हों। **सामाइयस्स सइअकरणया =** सामायिक की स्मृति न रखी हो। **सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया =** विधिपूर्वक सामायिक का पालन नहीं किया हो। **तस्स =** वह। **मिच्छा =** मिथ्या हो। **मि =** मेरा। **दुक्कडं =** दोष।

सामाइयं सम्मं = सामायिक व्रत को सम्यक् प्रकार। **काएणं न फासियं =** काया से न स्पर्शा हो। **न पालियं =** न पाला हो। **न तीरियं =** पूर्ण न किया हो। **न किट्टियं =** कीर्तन न किया हो। **न सोहियं =** शोधन न किया हो। **न आराहियं =** आराधन न किया हो। **आणाए =** आज्ञानुसार। **अणुपालियं न भवइ =** पालन नहीं किया हो। **तस्स मिच्छा मि दुक्कडं =** मेरा वह पाप मिथ्या हो।

यह समापन सूत्र है। साधक अपनी साधना में सावधानी रखता है, फिर भी उससे भूलों का होना सहज सम्भव है, पर भूलों का संशोधन कर लेना उसका कर्त्तव्य है।

प्रस्तुत पाठ में सामायिक–व्रत के पाँच अतिचार बताये गये हैं, जिनका आचरण नहीं करना चाहिए।

साधक को सामायिक–व्रत का सम्यक् रूप से ग्रहण, स्पर्शन और पालन करना चाहिए, तभी उसकी साधना सम्यक् साधना हो सकती है।

◆◇◆

सामायिक ग्रहण करने की विधि

1. शान्त तथा एकान्त स्थान का उपाश्रय अथवा घर में चयन करें।
2. पूँजनी से उस स्थान का प्रमार्जन या प्रतिलेखन कर आसन बिछावें।
3. गृहस्थ वेश एवं वस्त्रों का परित्याग कर बिना सिले हुए श्वेत सूती वस्त्र धारण करे। (बहिनें सादा वस्त्र धारण किये रहें।)
4. मुँह पर मुँहपत्ती धारण करें।
5. तत्पश्चात् गुरुजन या सतियाँ जी हों, तो उनकी ओर मुँह करके अथवा उनके न होने पर ईशान कोण (पूर्व और उत्तर के मध्य की ओर अभिमुख होकर **(क) गुरुवन्दन सूत्र (तिक्खुत्तो) से**–तीन बार वन्दना करें। तत्पश्चात् बैठकर या खड़े होकर सामायिक सूत्र के पाठों का निम्न क्रमानुसार उच्चारण करें :–

   (ख) नमस्कार मन्त्र–एक बार

   (ग) आलोचना सूत्र (इरियावहिया का पाठ)–एक बार

   (घ) उत्तरीकरण सूत्र (तस्स उत्तरी का पाठ)–अप्पाणं वोसिरामि से पहले **''एक इच्छाकारेणं का काउस्सग्ग''** बोलें। पश्चात् **आलोचना सूत्र** (इरियावहिया) का काउस्सग्ग करें।

   कायोत्सर्ग की विधि इस प्रकार से है–खड़े होकर दोनों पैर धरती पर समस्थापित कर दोनों पैरों के बीच में पीछे तीन अंगुल और आगे चार अंगुल जगह छोड़कर

दोनों हाथ सीधे लटका कर पैरों के अँगूठों के बीच में दृष्टि जमा कर वांछित पाठ का काउस्सग्ग (मन में चिन्तन) करें। यदि बैठे हुए काउस्सग्ग करना हो, तो पालथी लगाकर पालथी के मध्य भाग में बाएँ हाथ की हथेली में दाएँ हाथ की हथेली रखकर हथेली की सीध में दृष्टि जमाकर 'अप्पाणं वोसिरामि' शब्द बोलने के साथ काउस्सग्ग में वाञ्छित पाठ का मौन चिन्तन करें। काउस्सग्ग पूर्ण होने पर 'नमो अरिहंताणं' बोलें और काउस्सग्ग पारें।

(ङ) कायोत्सर्ग शुद्धि का पाठ–एक बार

(च) उत्कीर्तन सूत्र (लोगस्स का पाठ)–एक बार

(छ) प्रतिज्ञा सूत्र (करेमि भंते का पाठ)–एक बार

पाठ बोलते समय 'जाव नियमं' के पश्चात् जितनी सामायिक लेनी हो, उतने मुहूर्त्त उपरान्त न पालूँ तब तक, यह कहकर 'पज्जुवासामि' बोलते हुए पाठ पूरा करें।

(ज) शक्रस्तव–प्रणिपात सूत्र (नमोत्थु णं का पाठ)–दो बार।

यह पाठ पढ़ने से पहले बायाँ घुटना खड़ा कर इस घुटने पर अञ्जलिबद्ध दोनों हाथ रखें। फिर इस पाठ का उच्चारण करें।

दूसरी बार 'नमोत्थु णं' बोलते 'ठाणं संपत्ताणं' के स्थान पर 'ठाणं संपाविउकामाणं' का उच्चारण करें।

◆◇◆

सामायिक ग्रहण करने के पश्चात् समापन काल (पारने तक) तक के कार्यक्रम

1. अध्ययन।
2. स्वाध्याय।
3. ध्यान।
4. जप, माला व आनुपूर्वी फेरना।
5. प्रवचन सुनना।
6. प्रार्थना, स्तवन आदि बोलना।
7. धार्मिक चर्चा या वार्ता करना।

सामायिक पारने की विधि

जितनी सामायिक का व्रत ग्रहण किया, उतना मुहूर्त (समय) पूर्ण होने पर निम्नानुसार सूत्रों का क्रमशः उच्चारण करें:–

1. **नमस्कार मन्त्र**–एक बार।
2. **आलोचना सूत्र (इच्छाकारेणं का पाठ)**–एक बार।
3. **उत्तरीकरण सूत्र (तस्सउत्तरी का पाठ)**–एक बार।

'झाणेणं' तब बोलकर **'एक लोगस्स का काउस्सग्ग'** बोलकर फिर **'अप्पाणं वोसिरामि'** बोलें। पश्चात् मन में **उत्कीर्तन सूत्र (लोगस्स का पाठ)** का पहले बताई हुई विधि से काउस्सग्ग करें।

काउस्सग्ग पूर्ण होने पर 'नमो अरिहंताणं' प्रकट में बोलकर काउस्सग्ग पारें।

4. **कायोत्सर्ग-शुद्धि का पाठ**-एक बार।
5. **उत्कीर्तन सूत्र (लोगस्स का पाठ)**-एक बार।
6. **शक्रस्तव-प्रणिपात सूत्र (नमोत्थु णं का पाठ)**-दो बार।
7. **समाप्ति सूत्र (एयस्स नवमस्स)**-एक बार।
8. **नमस्कार मन्त्र**-तीन बार।

सामायिक के बत्तीस दोष

मन के दस दोष

अविवेग जसोकित्ति, लाभत्थी गव्व भय नियाणत्थी।
संसय रोस अविणओ, अबहुमाण ए दस दोसा भणियव्वा।।

1. **अविवेक दोष =** विवेक नहीं रखना।
2. **यशोवांछा दोष =** यशकीर्ति की इच्छा करना।
3. **लाभवांछा दोष =** धनादि के लाभ की इच्छा करना।
4. **गर्व दोष =** गर्व सहित सामायिक करना।
5. **भय दोष =** भय से सामायिक करना।
6. **निदान दोष =** भविष्य के सुख की कामना करना।
7. **संशय दोष =** सामायिक के फल की प्राप्ति में सन्देह करना।
8. **रोष दोष =** क्रोध, मान, माया, लोभ करना।
9. **अविनय दोष =** देव, गुरु, धर्म की अविनय आशातना करना।
10. **अबहुमान दोष =** भक्तिभावपूर्वक सामायिक न करना।

◆◇◆

वचन के दस दोष

कुवयण सहसाकारे, सचछंदं संखेव कलहं च।
विगहा विहासोऽसुद्धं, निरवेक्खो मुणमुणा दोसा दस।।

1. **कुवचन दोष =** बुरे वचन बोलना।
2. **सहसाकार दोष =** बिना विचारे बोलना।
3. **स्वच्छन्द दोष =** राग-रागनियों से सम्बन्धित गीत गाना।
4. **संक्षेप दोष =** पाठ और वाक्यों को छोटे करके बोलना।
5. **कलह दोष =** क्लेशकारी वचन बोलना।
6. **विकथा दोष =** स्त्री-कथा, भक्त-कथा (भोजन), देश-कथा, राज-कथा- इन चार विकथाओं में से कोई विकथा करना।
7. **हास्य दोष =** हँसी-ठट्ठा करना।
8. **अशुद्ध दोष =** पाठ को अशुद्ध बोलना।
9. **निरपेक्ष दोष =** बिना उपयोग बोलना।
10. **मुम्मण दोष =** अस्पष्ट-मुणमुण बोलना।

काया के बारह दोष

कुआसणं चलासणं चलदिट्ठि,
सावज्जकिरियालंबणाकुंचण-पसारणं।
आलस्स मोडण मल विमासणं,
निद्दा वेयावच्च त्ति बारस्स कायदोसा।।

1. **कुआसन दोष =** अयोग्य–अभिमान आदि के आसन से बैठना।
2. **चलासन दोष =** आसन बार–बार बदलना।
3. **चलदृष्टि दोष =** इधर–उधर दृष्टि फेरना।
4. **सावद्य क्रिया दोष =** सावद्य क्रिया–सीना, पिरोना आदि गृह–कार्य करना।
5. **आलम्बन दोष =** भींतादि का सहारा लेना।
6. **आकुंचन–प्रसारण दोष =** बिना कारण हाथ–पैर फैलाना, समेटना।
7. **आलस्य दोष =** अङ्ग मोड़ना आदि आलस करना।।
8. **मोटन दोष =** हाथ, पैर की अँगुलियों का कड़का निकालना।
9. **मल दोष =** मैल उतारना।
10. **विमासन दोष =** गले या गाल पर हाथ लगा कर शोकासन से बैठना।
11. **निद्रा दोष =** निद्रा लेना।
12. **वैयावृत्य दोष =** बिना कारण दूसरों से वैयावृत्य–सेवा कराना।

◆◇◆

सामायिक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. मन्त्र किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिस सूत्र में कम शब्दों में अधिक भाव और विचार हों और जो कार्यसिद्धि में सहायक हो, उसे मन्त्र कहते हैं।

प्रश्न 2. नमस्कार मन्त्र का क्या महत्त्व है ?

उत्तर– प्राकृत भाषा में नमस्कार को नमोक्कार कहते हैं। इसमें पाँच पदों को नमन किया गया है। इनमें से प्रथम दो देवपद (अरिहंत और सिद्ध) एवं शेष तीन गुरु पद (आचार्य, उपाध्याय एवं साधु) हैं। ये पाँचों पद अपने आराध्य या इष्ट हैं, इसलिए इन्हें पंच परमेष्ठी भी कहा गया है। इस मन्त्र के उच्चारण से पापों का नाश होता है। यह मंगलकारी है।

प्रश्न 3. नमस्कार मन्त्र मंगल रूप क्यों हैं ?

उत्तर– **मं** का अर्थ पाप है और **गल** का अर्थ है–गलाना। जो पाप को गलावे, वह मंगल है। नमस्कार मन्त्र से पाप का क्षय होता है, पाप रुकते हैं, इसलिए नमस्कार मन्त्र मंगल रूप है।

प्रश्न 4. नमस्कार मन्त्र में कितने पद और अक्षर हैं ?

उत्तर– नमस्कार मन्त्र में 5 पद और 35 अक्षर है। चूलिका को मिलाने पर कुल 9 पद और 68 अक्षर होते हैं।

प्रश्न 5. नमस्कार मन्त्र में धर्मपद कौन सा है ?

उत्तर– नमस्कार मन्त्र में 'नमो' शब्द धर्म पद है। 'नमो' विनय का प्रतिपादक है। विनय ही धर्म का मूल है।

प्रश्न 6. नमस्कार मन्त्र किस भाषा में है ?

उत्तर– नमस्कार मन्त्र प्राकृत (अर्धमागधी प्राकृत) भाषा में है।

प्रश्न 7. अरिहन्त किसे कहते हैं ?

उत्तर– जिन्होंने चार घाति कर्मों–ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय का क्षय करके अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र और अनन्त बल वीर्य नामक चार मूल गुणों को परिपूर्ण रूप से प्रकट कर लिया है, उन्हें अरिहन्त कहते हैं, इन्हें तीर्थङ्कर या जिन भी कहते हैं।

प्रश्न 8. सिद्ध किसे कहते हैं ?

उत्तर– जो आठों कर्मों का क्षय करके सिद्ध हो चुके हैं, उन्हें सिद्ध कहते हैं।

प्रश्न 9. अरिहन्त और सिद्ध में क्या अन्तर हैं ?

उत्तर– अरिहन्त भगवान चार घनघाति कर्मों–ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय का क्षय कर चुके हैं। अरिहन्त सशरीरी होते हैं तथा तीर्थ की स्थापना करते हैं, उपदेश देते हैं और धर्म से गिरते हुए साधकों को स्थिर करते हैं, जबकि सिद्ध आठ कर्मों (1. ज्ञानावरणीय, 2. दर्शनावरणीय, 3. मोहनीय, 4. अन्तराय, 5. वेदनीय, 6. आयु, 7. नाम, 8. गोत्र) को क्षय करके सिद्ध हो गये हैं और वे सुखरूप सिद्धालय में विराजमान हैं। वे अशरीरी होने से उपदेश आदि की प्रवृत्ति नहीं करते।

प्रश्न 10. सिद्ध मुक्त हैं, फिर भी सिद्धों के पहले अरिहन्तों को नमस्कार क्यों किया गया ?

उत्तर– अरिहन्त धर्म को प्रकट कर मोक्ष की राह दिखाने वाले और सिद्धों की पहचान कराने वाले हैं। अरिहन्त सशरीरी हैं और सिद्ध अशरीरी, इसलिए परम उपकारी होने के कारण सिद्धों के पहले अरिहन्तों को नमस्कार किया गया है।

प्रश्न 11. आचार्य किसे कहते हैं ?

उत्तर– चतुर्विध संघ के वे श्रमण, जो संघ के नायक होते हैं और जो स्वयं पंचाचार का पालन करते हुए साधु–संघ में भी आचार पलवाते हैं, उन्हें आचार्य कहते हैं। ये 36 गुणों के धारक होते हैं।

प्रश्न 12. उपाध्याय किसे कहते हैं ?

उत्तर– वे श्रमण, जो स्वयं शास्त्रों का अध्ययन करते हैं और दूसरों को अध्ययन करवाते हैं, उन्हें उपाध्याय कहते हैं। ये 25 गुणों के धारक होते हैं।

प्रश्न 13. साधु किसे कहते हैं ?

उत्तर– गृहस्थ धर्म का त्याग कर जो पाँच महाव्रत–1. अहिंसा, 2. सत्य, 3. अचौर्य, 4. ब्रह्मचर्य और 5. अपरिग्रह को पालते हैं एवं शास्त्रों में प्रतिपादित समस्त आचार संहिताओं का पालन करते हैं, उन्हें साधु कहते हैं। ये 27 गुणों के धारक होते हैं।

प्रश्न 14. तिक्खुत्तो के पाठ का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर– यह गुरुवन्दन सूत्र है। आध्यात्मिक साधना में गुरु का पद सबसे ऊँचा है। संसार के प्राणिमात्र के अज्ञानात्मक अन्धकार को दूर करके ज्ञानरूपी प्रकाश फैलाने वाले गुरु हैं। मुक्ति के मार्ग पर गुरु ही ले जाते हैं। ऐसे गुरुदेव की विनयपूर्वक वन्दना करना ही इस पाठ का प्रयोजन है।

प्रश्न 16. तिक्खुत्तो के पाठ का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर– तिक्खुत्तो के पाठ का दूसरा नाम गुरुवन्दन सूत्र है।

प्रश्न 17. गुरुवन्दनसूत्र में तीन बार वन्दना क्यों की जाती है ?

उत्तर– हमारे गुरुदेव रत्नत्रय (सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक् चारित्र) के धारक हैं, इसलिए उन्हें तीन बार वन्दना की जाती है।

प्रश्न 18. तिक्खुत्तो के पाठ से वन्दना किस प्रकार करनी चाहिए ?

उत्तर– तिक्खुत्तो का पाठ बोलते तिक्खुत्तो शब्द के उच्चारण के साथ ही दोनों हाथ ललाट के बीच में रखने चाहिए। आयाहिणं शब्द के उच्चारण के साथ अपने दोनों हाथ अपने ललाट के बीच में से अपने स्वयं के दाहिने (Right) कान की ओर ले जाते हुए गले के पास से होकर बायें (Left) कान की ओर घुमाते हुए पुनः ललाट के बीच में लाना चाहिए। इस प्रकार एक आवर्तन पूरा करना चाहिए। इसी प्रकार से पयाहिणं और करेमि शब्द बोलते हुए भी एक–एक आवर्तन पूरा करना, इस प्रकार तिक्खुत्तो का एक बार पाठ बोलने में तीन आवर्तन देने चाहिए। तीनों बार तिक्खुत्तो के पाठ से इसी प्रकार तीन–तीन आवर्तन देने चाहिए।

परम श्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. अपने स्वयं के दाहिनी ओर से हाथ घुमाने की विधि को सही मानकर आवर्तन देते थे। आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. भी वर्तमान में इसी विधि को उपयुक्त मानकर वन्दनादि करते हैं।

प्रश्न 18. आवर्तन तीन बार क्यों किये जाते हैं ?

उत्तर– मन, वचन और काया से वन्दनीय की पर्युपासना करने के लिए तीन बार आवर्तन किये जाते हैं।

प्रश्न 19. तिक्खुत्तो के पाठ में 'वंदामि' और 'नमंसामि' शब्दों का साथ–साथ प्रयोग क्यों किया है ?

उत्तर– तिक्खुत्तो के पाठ में 'वंदामि' का अर्थ है–वन्दना करता हूँ और 'नमंसामि' का अर्थ है–नमस्कार करता हूँ। वन्दन में वचन द्वारा गुरुदेव का गुणगान किया जाता है, किन्तु नमस्कार में पाँचों अङ्गों को नमाकर काया द्वारा नमन किया जाता है।

प्रश्न 20. तिक्खुत्तो के पाठ में आये हुए 'सक्कारेमि' और 'सम्माणेमि' का क्या अर्थ है ?

उत्तर– सक्कारेमि का अर्थ है–गुणवान पुरुषों को वस्त्र, पात्र, आहार, आसन आदि देकर उनका सत्कार करना। सम्माणेमि का अर्थ है–गुणवान पुरुषों को मन और आत्मा से बहुमान प्रदान करना।

प्रश्न 21. वन्दन करने से किस गुण की प्राप्ति होती है ?

उत्तर– वन्दन करने से जीव नीच गोत्रकर्म का क्षय करता है और उच्च गोत्रकर्म का बन्ध करता है, फिर वह स्थिर सौभाग्यशाली होता है, उसकी आज्ञा सफल होती है तथा वह दाक्षिण्यभाव अर्थात् लोकप्रियता को प्राप्त कर लेता है।

प्रश्न 22. 'इरियावहिया' के पाठ का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर– 'इरियावहिया' के पाठ से गमनागमन के दोषों की शुद्धि की जाती है। गमनागमन करते हुए प्रमादवश यदि किसी जीव को पीड़ा पहुँची हो, तो इसके द्वारा खेद प्रकट किया जाता है।

प्रश्न 23. 'इरियावहिया' के पाठ में कितने प्रकार के जीवों की विराधना का उल्लेख है ?

उत्तर– 'इरियावहिया' के पाठ में पाँच प्रकार के जीवों (एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय) की विराधना का उल्लेख है।

प्रश्न 24. 'इरियावहिया' के पाठ में विराधना (जीव–हिंसा) के कितने प्रकार हैं और वे कौन–कौन से हैं ?

उत्तर– 'इरियावहिया' के पाठ में विराधना दस प्रकार की बतलायी है, यथा–1. अभिहया, 2. वत्तिया, 3. लेसिया, 4. संघाइया,

5. संघट्टिया, 6. परियाविया, 7. किलामिया, 8. उद्दविया, 9. ठाणाओ ठाणं संकामिया और 10. जीवियाओ ववरोविया।

प्रश्न 25. 'तस्सउत्तरी' के पाठ का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर– तस्सउत्तरी के पाठ से साधक कायोत्सर्ग करने की प्रतिज्ञा करता है, जिससे वह आत्मा को शरीर से पृथक् कर उसे (आत्मा को) कषायों से मुक्त कर सके।

प्रश्न 26. 'तस्सउत्तरी' पाठ का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर– 'तस्स उत्तरी' पाठ को 'उत्तरीकरण सूत्र' एवं 'आत्म–शुद्धि का पाठ' भी कहते हैं।

प्रश्न 27. कायोत्सर्ग की क्या काल मर्यादा है ?

उत्तर– कायोत्सर्ग की कोई निश्चित काल मर्यादा नहीं है। इसकी पूर्ति ''नमो अरिहंताणं'' कहकर की जाती है और कायोत्सर्ग काया को स्थिर करके, मौन धारण करके और मन को एकाग्र करके किया जाता है।

प्रश्न 28. कायोत्सर्ग में कितने आगार हैं ?

उत्तर– कायोत्सर्ग के 1. ऊससिएणं, 2. नीससिएणं, 3. खासिएणं, 4. छीएणं, 5. जंभाइएणं, 6. उड्डुएणं, 7. वायनिसग्गेणं, 8. भमलीए, 9. पित्त मुच्छाए, 10. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, 11. सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं और 12. सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, ये 12 आगार हैं।

प्रश्न 29. 'तस्स उत्तरी' पाठ में 'अभग्गो अविराहियो' का क्या अर्थ है ?

उत्तर– तस्स उत्तरी पाठ में 'अभग्गो' का अर्थ है–काउस्सग्ग खण्डित नहीं होना और अविराहिओ का अर्थ है–काउस्सग्ग आंशिक रूप

से भङ्ग नहीं होना। काउस्सग्ग में सर्व विराधना न होना 'अभग्गो' तथा आंशिक विराधना न होना 'अविराहिओ' कहलाता है।

प्रश्न 30. 'लोगस्स' पाठ का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर– 'लोगस्स' पाठ में भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक चौबीस तीर्थङ्करों की स्तुति की गई है। ये हमारे इष्टदेव हैं। इन्होंने अहिंसा और सत्य का मार्ग बताया है। इनकी भावपूर्वक स्तुति करने से जीवन पवित्र और दिव्य बनता है।

प्रश्न 31. 'लोगस्स' पाठ का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर– 'लोगस्स' पाठ का दूसरा नाम 'उत्कीर्तन सूत्र' और 'चतुर्विंशतिस्तव' है।

प्रश्न 32. 'करेमि भंते' पाठ का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर– 'करेमि भंते' पाठ से सभी पापों का त्याग कर सामायिक व्रत लेने की प्रतिज्ञा की जाती है। इसे सामायिक प्रतिज्ञा सूत्र भी कहते हैं।

प्रश्न 33. सामायिक का क्या लाभ है ?

उत्तर– सामायिक द्वारा पापों के आस्रव को रोककर संवर की आराधना होती है और सामायिक काल में स्वाध्याय करने से कर्मों की निर्जरा होती है। इसके फल के बारे में कहा गया है कि प्रतिदिन लाख स्वर्ण खण्डियों का दान करने वाला व्यक्ति एक शुद्ध सामायिक करने वाले की समानता नहीं कर सकता।

प्रश्न 34. सामायिक व्रत कितने काल, कितने करण और कितने योग से किया जाता है ?

उत्तर– सामायिक व्रत एक मुहूर्त यानी 48 मिनट के लिए, दो करण

(पाप स्वयं नहीं करना और दूसरों से नहीं कराना) और तीन योग (मन, वचन और काया) से किया जाता है।

प्रश्न 35. 'नमोत्थु णं' पाठ का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर– इस पाठ के द्वारा सिद्ध और अरिहन्त देवों की भावपूर्वक अनेक गुणों का वर्णन करते हुए स्तुति की जाती है तथा उनके गुण हमारी आत्मा में भी प्रकट करना, मुख्य प्रयोजन है।

प्रश्न 36. 'नमोत्थु णं' पाठ का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर– इस पाठ को 'शक्रस्तव' पाठ भी कहते हैं, क्योंकि प्रथम देवलोक के इन्द्र–शकेन्द्र भी तीर्थङ्करों–अरिहन्तों की इस पाठ से स्तुति करते हैं। इसका एक अन्य नाम प्रणिपात सूत्र भी है। प्रणिपात का अर्थ–अत्यन्त विनम्रता एवं बहुमानपूर्वक अरिहन्त–सिद्ध की स्तुति करना है।

प्रश्न 37. पहला 'नमोत्थु णं' किसको दिया जाता है ?

उत्तर– पहला 'नमोत्थु णं' सिद्ध भगवन्तों को दिया जाता है।

प्रश्न 38. दूसरा 'नमोत्थु णं' किसको दिया जाता है ?

उत्तर– दूसरा 'नमोत्थु णं' अरिहन्त भगवन्तों को दिया जाता है।

प्रश्न 39. नमस्कार मन्त्र में पहले अरिहन्तों को नमस्कार किया गया पर 'नमोत्थु णं' में पहले सिद्धों को नमस्कार क्यों किया गया ?

उत्तर– नमस्कार में उपकार की प्रधानता होती है जबकि स्तुति में गुणों की प्रधानता होती है। नमस्कार मन्त्र में जीवों पर उपकार की दृष्टि से पहले अरिहन्तों को नमस्कार किया गया, किन्तु 'नमोत्थु णं' में शकेन्द्र महाराज ने आत्मिक गुणों में बड़े होने की दृष्टि से पहले सिद्धों को नमस्कार किया।

प्रश्न 40. सामायिक के उपकरण कौन–कौन से हैं ?

उत्तर– 1. बैठने हेतु–सूती या ऊनी आसन।

2. पहनने और ओढ़ने के लिए बिना सिले हुए श्वेत दो सूती वस्त्र।

3. मुँहपत्ती।

4. पूँजनी।

5. स्वाध्याय हेतु धार्मिक पुस्तकें आदि।

महिलाओं के लिए सादे वस्त्र और अन्य उपकरण ऊपर लिखे अनुसार।

प्रश्न 41. सामायिक किसे कहते हैं ?

उत्तर– समभाव की साधना को सामायिक कहते हैं, अनुकूल वस्तु पर राग न करना तथा प्रतिकूल वस्तु पर द्वेष न करना अथवा राग–द्वेष में सम रहने की साधना ही सामायिक है।

व्यावहारिक अर्थ में सावद्य योगों (पापकारी कार्य) का त्याग कर कम से कम एक मुहूर्त्त (48 मिनिट) तक राग–द्वेष को जीतने की क्षमता का विकास करने की क्रिया सामायिक है।

◆◇◆

चौबीस तीर्थङ्कर

1.	श्री ऋषभदेव जी	2.	श्री अजितनाथ जी
3.	श्री सम्भवनाथ जी	4.	श्री अभिनन्दन जी
5.	श्री सुमतिनाथ जी	6.	श्री पद्मप्रभ जी
7.	श्री सुपार्श्वनाथ जी	8.	श्री चन्द्रप्रभ जी
9.	श्री सुविधिनाथ जी	10.	श्री शीतलनाथ जी
11.	श्री श्रेयांसनाथ जी	12.	श्री वासुपूज्य जी
13.	श्री विमलनाथ जी	14.	श्री अनन्तनाथ जी
15.	श्री धर्मनाथ जी	16.	श्री शान्तिनाथ जी
17.	श्री कुन्थुनाथ जी	18.	श्री अरनाथ जी
19.	श्री मल्लिनाथ जी	20.	श्री मुनिसुव्रत जी
21.	श्री नमिनाथ जी	22.	श्री अरिष्टनेमि जी
23.	श्री पार्श्वनाथ जी	24.	श्री महावीरस्वामी जी

बीस विहरमान

1.	श्री सीमंधरस्वामी जी	2.	श्री युगमंधरस्वामी जी
3.	श्री बाहुस्वामी जी	4.	श्री सुबाहुस्वामी जी
5.	श्री सुजातस्वामी जी	6.	श्री स्वयंप्रभस्वामी जी
7.	श्री ऋषभाननस्वामी जी	8.	श्री अनन्तवीर्यस्वामी जी
9.	श्री सूरप्रभस्वामी जी	10.	श्री विशालधरस्वामी जी
11.	श्री वज्रधरस्वामी जी	12.	श्री चन्द्राननस्वामी जी

13. श्री चन्द्रबाहुस्वामी जी
14. श्री भुजङ्गस्वामी जी
15. श्री ईश्वरस्वामी जी
16. श्री नेमीश्वरस्वामी जी
17. श्री वीरसेनस्वामी जी
18. श्री महाभद्रस्वामी जी
19. श्री देवयशस्वामी जी
20. श्री अजितवीर्यस्वामी जी

ग्यारह गणधर

1. श्री इन्द्रभूति जी
2. श्री अग्निभूति जी
3. श्री वायुभूति जी
4. श्री व्यक्तस्वामी जी
5. श्री सुधर्मास्वामी जी
6. श्री मण्डित जी
7. श्री मौर्यपुत्र जी
8. श्री अकंपित जी
9. श्री अचलभ्राता जी
10. श्री मेतार्यस्वामी जी
11. श्री प्रभासस्वामी जी

सोलह सतियाँ

1. श्री ब्राह्मी जी
2. श्री सुन्दरी जी
3. श्री कौशल्या जी
4. श्री सीता जी
5. श्री राजीमती जी
6. श्री कुन्ती जी
7. श्री द्रौपदी जी
8. श्री चन्दनबाला जी
9. श्री मृगावती जी
10. श्री पुष्पचूला जी
11. श्री प्रभावती जी
12. श्री सुभद्रा जी
13. श्री दमयन्ती जी
14. श्री सुलसा जी
15. श्री शिवादेवी जी
16. श्री पद्मावती जी

◆◇◆

सामायिक सन्देश

(रचयिता :: आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.)

जीवन उन्नत करना चाहो तो,
सामायिक साधन कर लो।
आकुलता से बचना चाहो तो,
सामायिक साधन कर लो ।।टेर।।

तन, धन, परिजन सब सपने हैं,
नश्वर जग में नहीं अपने हैं।
अविनाशी सद्गुण पाना हो,
तो सामायिक साधन कर लो ।।1 ।।

चेतन निज घर को भूल रहा,
पर घर माया में झूल रहा।
सद्चित् आनन्द को पाना हो,
तो सामायिक साधन कर लो ।।2 ।।

विषयों में निज गुण मत भूलो,
अब काम क्रोध में मत झूलो।
समता के सर में नहाना हो,
तो सामायिक साधन कर लो ।।3 ।।

तन–पुष्टि हित व्यायाम चला,
मन–पोषण को शुभध्यान भला।
आध्यात्मिक बल पाना चाहो,
तो सामायिक साधन कर लो ।।4 ।।

सब जग जीवों में बन्धु–भाव,
अपना लो तज के वैर भाव।
सब जन के हित में सुख मानो,
तो सामायिक साधन कर लो ।।5 ।।

निर्व्यसनी हो, प्रामाणिक हो,
धोखा न किसी जन के संग हो।
संसार में पूजा पाना हो,
तो सामायिक साधन कर लो ।।6 ।।

साधक सामायिक संघ बनें,
सब जन सुनीति के भक्त बनें।
नरलोक में स्वर्ग बसाना हो,
तो सामायिक साधन कर लो ।।7 ।।

◆◇◆

उपाध्याय श्री मानमुनि गुणगान

मुनिवर 'मान' महान् हैं, जिनशासन की शान है।
त्यागी और वैरागी उत्तम, साधु की पहचान है।।टेर।।

रत्नवंश के अनुपम मोती, उपाध्याय पद पाया हो,
नाम 'मान' पर ज्ञान क्रिया का, मान तनिक नहीं आया हो,
जीवन विनय प्रधान है, गुण रत्नों की खान है।।1।। त्यागी....

आत्मार्थी, शान्त मूर्ति, प्रवचन सरल, रसीले हो,
चौथा आरा याद करे, जो वाणी अमृत, पीले हो,
गहरा आगम ज्ञान है, साधक, प्रज्ञावान है।।2।। त्यागी....

तप संयम का तेज झलकता, कर में रहती माला हो,
तारों में चन्दा सा देखो, है व्यक्तित्व निराला हो,
चेहरे पर मुस्कान है, शान्त, सौम्य, गुणवान है।।3।। त्यागी....

सन्तों की सेवा में निश-दिन, आप रहे हैं आगे हो,
शिथिलाचार प्रपञ्चों से, ये दूर हमेशा भागे हो,
कथनी करनी समान है, करता 'गौतम' गान है।।4।। त्यागी....

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के विविध सेवा सोपान

• जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का प्रकाशन •

• जैन इतिहास, आगम एवं अन्य सत्साहित्य का प्रकाशन •

• अखिल भारतीय स्तर पर जैन विद्वत्संगोष्ठियों का आयोजन •

• श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान का सञ्चालन •

• आचार्यश्री हस्ती स्मृति व्याख्यान-माला का आयोजन •

उक्त प्रवृत्तियों में दानी एवं प्रबुद्ध चिन्तकों के रचनात्मक सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

सम्पर्क सूत्र

मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

सुबोध बॉयज सीनियर सैकेण्डरी विद्यालय के ऊपर,

बापू बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान)

दूरभाष : 0141-2575997

Email : sgpmandal@yahoo.in